कुछ भी नहीं

कीमती से कीमती चीज टूटती है
इस दुनिया में वफा कुछ भी नहीं

मैं जल गया हूँ बुझे चिरागों से
वो कहते है हुआ कुछ भी नहीं

वो किसी और के बाग का गुल है
इस इश्क में मिला कुछ भी नहीं

वो रोशन है किसी और के नूर से
मेरी दिल की तपिश कुछ भी नहीं

चाह बस एक शख्स ऐसा जिंदगी में
पर मिला वो मुझे कुछ भी नहीं

बेरहमी से तोड़ा इश्क का जाम
और कहा तुम मेरे कुछ भी नहीं

टूट चुके है अरमानों के टुकड़े भी
अब खुद से उपर कुछ भी नहीं

प्रेमिका

विधा–मुक्त

श्रृंगार आधरों से कर दो मेरा
मुझको बसा लो अपने में
मैं पूर्ण हो जाऊ तुम में ही
मुझको छुपा लो अंगो में

मैं कुसुम किसलीय से भरा
जुड़े में सजा लो मुझको
मैं मुस्कान तुम्हारी प्रिय
लबों से लगा लो मुझको

मैं देख-देख यौवन तेरा
हर बार हार सा जाता हूँ
मैं तुझे नैनो में भरकर
झूम-झूम सा जाता हूँ

मैं डूबा मझधार,शुभे
इन चक्ष समन्दर में कहीं
मैं अपने होश नहीं
मदहोश पड़ा इनमें

कोमल अंगों की बनावट
हर लेती है प्राण मेरे
नयन भर देख सकूं
इतना कहा आधार प्रिये

मैं हर क्षण अपने भीतर
तुझको खोजता रहता हूँ
मैं एक पल को भी अब

दूर तुझसे नहीं रहता हूँ

मेरे प्रेम का परमेय
समझ इसे है कौनसका
तुम मेरे ही परछाई हो
इसे मैं कब समझ सका

मैं खिन्न सा मन लिए
जब पास तुम्हारे आता हूँ
तुम तब भी मुझको देखो
वैसे जैसा मैं चाहता हूँ

हूँ प्रेमी पर मैं अपने
मान की ठेस कहाँ ले जाऊं
मेरी अर्धांगनी हो तुम
तुम बिन स्वर्ग कैसे पाऊं

मैं बिखरा सा रहता हूँ
फिर तुम मुझे समेट लेती हो
मेरे बिन बताए तुम
सब कुछ समझ लेती हो

कहाँ से उऋण हो पाऊंगा
समझ मुझे नहीं आता है
मैं जहां भी हूँ देखता
मन अंत तुमको पाता है

मेरी दारुण सी इच्छाएं
बरबस रौंद देती तुमको
मेरे पौरुष का मद
निचोड़ देता है तुमको

फिर भी तुम मुस्कान लिए

मेरे समक्ष आ जाती हो
मेरे प्रेम में तुम अपना
घर-संसार बसती हो

उषा सोलंकी